वह शख्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

मार्क ट्वेन

की दो अमर कहानियाँ

मार्क ट्वेन की दो अमर कहानियाँ

वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

यह पुस्तक राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित की गई है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाई जा रही है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से सम्पर्क कर सकते हैं या फिर अमेजन से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://www.amazon.in/dp/8189760556

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है। जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से भी खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

वह राख़स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

मार्क ट्वेन

की दो अमर कहानियाँ

अनुवाद
सत्यम

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

मूल्य : रु. 60.00

पहला संस्करण : जनवरी, 2014

परिकल्पना प्रकाशन
(राहुल फाउण्डेशन का एक इम्प्रिंट)
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड
निशातगंज, लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा टाइपसेटिंग

चमन एंटरप्राइज़ेज़, दरियागंज, दिल्ली द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

Wah Shakhs Jisne Hadleyburg ko Bhrasht kar Diya
By ***Mark Twain***

ISBN 978-81-89760-55-7

प्रकाशकीय

पूँजीवाद सभ्यता और मूल्यों पर सबसे तीखी और मारक चोट करने वालों में से एक, महान अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन की दो कालजयी कहानियाँ हिन्दी में पहली बार प्रस्तुत करते हुए हमें ख़ुशी हो रही है।

हिन्दी में मार्क ट्वेन के नाम से तो बहुतेरे पाठक परिचित हैं लेकिन अधिकांश लोग उन्हें मज़ाकिया कहानियों के रचयिता के रूप में ही जानते हैं। वैसे भारत ही नहीं, ट्वेन के देश अमेरिका में भी उनके वास्तविक योगदान और विचारों को छिपाया और तोड़-मरोड़कर ही पेश किया जाता रहा है। ज़्यादातर पाठक उन्हें बच्चों के लिए मज़ेदार कहानियों के लेखक; या लोगों को हँसाने में माहिर व्यंग्यकार के तौर पर जानते हैं। कई बार उन्हें अपनी विफलताओं के कारण समाज पर गुस्सा उतारने वाले कटु मानवद्वेषी के तौर पर भी प्रस्तुत किया जाता है। या फिर अमेरिकी साहित्य के पितामहों में से एक, अमेरिकी स्वप्न के शक्तिशाली प्रतीक या राष्ट्रवादी नायक के रूप में उनकी छवि गढ़ने की कोशिशें होती रही हैं।

सच तो यह है कि मार्क ट्वेन पिछली सदी की शुरुआत में अमेरिकी शासक वर्ग की विचारधारा, उसकी राजनीति और पूँजीवादी संस्कृति के प्रखरतम और कटुतम आलोचकों में से एक थे। ख़ासकर, जीवन के अन्तिम दौर में, ट्वेन की प्रकाशित और अप्रकाशित कृतियाँ और उनके भाषण ज़बर्दस्त तौर पर नस्लवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी और रैडिकल हैं। उनके विपुल कृतित्व के इस पहलू से हिन्दी के पाठक प्रायः अपरिचित ही हैं। हमारा प्रयास होगा कि हम जनता के पक्ष के इस महान लेखक की महत्वपूर्ण कृतियों को हिन्दी में प्रस्तुत करें। इसकी शुरुआत पूँजीवादी लोभ-लालच और पाखण्ड पर करारी चोट करने वाली इन दो प्रसिद्ध कहानियों से की जा रही है।

'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' ट्वेन की सबसे शक्तिशाली कहानियों में गिनी जाती है। अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान के लिए ट्वेन वास्तव में क्या हैं, इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मैकार्थी काल में उनकी बहुतेरी रचनाओं का प्रकाशन-वितरण रोक दिया गया था। उसी

दौर की घटनाओं पर आधारित प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक हावर्ड फ़ास्ट के उपन्यास 'सिलास टिम्बरमन' में एक अमेरिकी प्रोफ़ेसर को इसलिए तमाम तरह की प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि वह अपने कॉलेज के पाठ्यक्रम में 'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' को शामिल कर लेता है। उस पर इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह कम्युनिज़्म का प्रचारक है। दूसरी कहानी भी पूँजी की भयंकर भ्रष्टकारी शक्ति और व्यक्तियों पर इसके विनाशकारी परिणामों को चित्रित करती है। कहने की ज़रूरत नहीं कि ट्वेन की तीखी व्यंग्यात्मक शैली में लिखी दोनों कहानियाँ जितनी गहरी चोट करती हैं उतना ही हँसाती भी हैं।

'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' कहानी का यह अनुवाद पहलेपहल 'सृजन परिप्रेक्ष्य' पत्रिका के प्रवेशांक में प्रकाशित हुआ था। इसके साथ दिये गये रेखांकन मैक्डेनियल कॉलेज, अमेरिका की वेबसाइट से साभार लिये गये हैं।

– परिकल्पना प्रकाशन

20.1.2014

अनुक्रम

प्रकाशकीय	5
वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया	9
30,000 डॉलर की वसीयत	67

वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

ये कई साल पहले की बात है। हैडलेबर्ग आसपास के सारे इलाक़े में सबसे ईमानदार और दयानतदार क़स्बा था। उसने पीढ़ियों से इस नेकनामी को बेदाग़ बनाये रखा था और उसे इस पर अपनी किसी भी दूसरी चीज़ से बढ़कर नाज़ था। उसे इस पर इस क़दर नाज़ था और वह इसे क़ायम रखने के लिए इतना बेताब था कि क़स्बे के लोग पालने में ही बच्चों को ईमानदारी की घुट्टी पिलाने लगते थे और उनकी शिक्षा के वर्षों के दौरान यही सबक उनकी पढ़ाई-लिखाई का मुख्य विषय होता था। साथ ही, परिपक्व होने तक बच्चों को हर तरह के लोभ-लालच से दूर रखा जाता था, ताकि उनकी ईमानदारी को अच्छी तरह पककर ठोस होने का मौक़ा मिले और वह उनके जिस्मो-जां का हिस्सा बन जाये। पड़ोसी क़स्बे इस सम्मानजनक श्रेष्ठता से जलते थे और हैडलेबर्ग के ख़ुद पर नाज़ करने को ग़ुरूर कहकर उसकी हँसी उड़ाते थे। लेकिन फिर भी, उन्हें ये स्वीकार करना ही पड़ता था कि हैडलेबर्ग वाक़ई ऐसा क़स्बा था जिसे भ्रष्ट नहीं किया जा सकता; और अगर थोड़ा ज़ोर दिया जाये तो वे ये भी स्वीकार करते कि अगर कोई नौजवान ज़िम्मेदारी वाले किसी रोज़गार की तलाश में अपना गृहनगर छोड़कर बाहर निकले तो उसे इस तथ्य के अलावा और किसी प्रमाणपत्र या सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं होती थी कि वह हैडलेबर्ग का रहने वाला है।

लेकिन आख़िरकार, समय के फेर में, हैडलेबर्ग ने बदक़िस्मती से वहाँ से गुज़रते एक अजनबी को ठेस पहुँचायी—शायद ऐसा उसने अनजाने में किया, लेकिन निश्चित ही उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी क्योंकि हैडलेबर्ग अपने आप में मगन था और अजनबियों या उनके ख़्यालों की ठेंगे भर भी परवाह नहीं करता था। लेकिन बेहतर होता अगर उसने इस शख़्स के मामले में अपवाद किया होता क्योंकि वह कड़वाहट से भरा और बदला लेने पर आमादा इन्सान